पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
हरिश्चंद्र सिंह चौहान

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन, वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - हरिश्चंद्र सिंह चौहान

"जल है तो कल है"

"जल है तो कल है"

तेजी से बढ़ती जनसंख्या व प्राकृतिक संसाधनों के घटते जल स्रोतो के कारण हमारी आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा स्वच्छ पेयजल को तरस रहा है वह कह रहा है कि हमें स्वच्छ जल चाहिए।

आज स्वच्छ जल की मांग व उसकी आपूर्ति एक चुनौती के रूप में है। आज पानी का व्यापार बहुत बढ़ गया है पीने के पानी के पाउच बोतलों के साथ टैंकरों से पानी बेचने का व्यवसाय दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। पीने के पानी का संकट भयावह स्थिति पैदा कर रहा है , नदी , तालाबो का पानी दूषित हो रहा है वहीं परम्परागत जल स्रोत कुएं बावड़ी सूख रहे हैं वर्षा के जल का संग्रह नहीं हो पा रहा है। बढ़ती जनसंख्या गिरता भू जल क्षमता से ज्यादा पानी का दोहन और पानी का अपव्यय पानी के संकट का मुख्य कारण है। समूचे देश में गर्मी आते ही पेयजल का संकट गहराने लगता है यदि समय रहते हुए पानी के दुरपयोग को नहीं रोका गया तो भयावह स्थिति बन सकती है। आने वाले दिनों में पानी की परेशानी न हो इसके लिए जरूरी है कि हम लोग पानी का मोल जाने। परम्परागत जल संसाधनो को जीवित रखें। नदियों, तालाबो, वनों के संरक्षण में अपना योगदान करें, यदि देखा जाए तो परम्परागत जल प्रबंधन न होने के कारण ही हमें जल के संकट का सामना करना पड़ता है। पानी के परम्परागत साधनों के प्रति संवेदनहीनता का ही परिणाम कहा जा सकता है। घर घर में बोरिंग की खुदाई में भू जल स्तर में कमी आ रही है। जीवन रेखा कहे जाने वाली झीलों व तालाबो में शहर की गंदगी इक्कठा हो रही है। कुछ देशों की रिपोर्ट के अनुसार 43 प्रतिशत पानी बेकार बह रहा है। कहीं नलों की टोपियां टूटी है तो कहीं पाइप लाइन की लीकेज से हजारों लीटर पेयजल बेकार बह जाता है। वाहनों को धोने में धड़ल्ले से पानी का अपव्यय किया जाता है।हम लोग हाथ धोने,ब्रश करने , नहाते समय नलों को खुला रखने की आदत को बदलें तो काफी मात्रा में पानी बचा सकते हैं।समय रहते हमें सावधान हो जाना होगा वरना पानी हमारे जीवन को संकट में ला सकता है।

गर्मी में यह संकट विकराल हो जाता है कहीं कहीं पानी के टैंकरों पर लोग टूट पड़ते हैं और एक बाल्टी पानी के लिए मारपीट होने की नौवत आ जाती है पुराने समय में लोग तालाब बावड़ी कुओं का निर्माण कर पुण्य कमाते थे। वहां आज पानी वेशकीमती हो गया है।

ऐसे में वर्षा जल को संग्रह करने की हमारी जिम्मेदारी है। रोजमर्रा के लिए औसतन पानी को खर्च करें।हम एक जागरूक नागरिक के कर्तव्य निभाते हुए खुद पानी की बचत करें और दूसरों को भी प्रेरित करे। पानी को बचाना अपने आप को बचाना है।जल के बिना हम जीने का संकल्प भी नहीं ले सकते,जल ही जीवन है जल ही शक्ति है। इस लिए हम कह सकते हैं कि मनुष्य ही तो है जो जल को संरक्षण और पर्यावरण को बचाने में अहम भूमिका निभा सकता है और अपने आने वाली पीढ़ी को पानी की बड़ी बचत के रूप में दे सकता है। आइए हम सब मिलकर संकल्प लें पानी का अपव्यय नहीं करेंगे।

- हरिश्चंद्र सिंह चौहान

लेखक परिचय

नाम – हरिश्चंद्र सिंह चौहान
ग्राम - सथिनी, मैनपुरी (उ०प्र०)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**हरिश्चंद्र सिंह चौहान**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...